मुबाहला

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला

फिर जो कोई तुम से इस बात में हुज्जत करे, इसके बाद कि तुम्हारे पास (इसका) इल्म पहुँच चुका है तो तुम उनसे कह दो कि अच्छा आओ हम अपने बेटों को बुलाएँ और तुम्हारे बेटों को भी और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को भी और अपने नफ़्सों को और तुम्हारे नफ्सों को भी। फिर हम (ख़ुदा के दरबार में आजज़ी) के साथ इल्तेजा करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें। बेशक यही है सच्चा वाक़ेआ और कोई माबूद नहीं सिवाए अल्लाह के। और बेशक अल्लाह ही ज़बरदस्त हिकमत वाला है। फिर अगर यह लोग अब भी क़बूल न करें तो यक़ीनन अल्लाह फसादियों को ख़ूब जानने वाला है। तुम कह दो कि ऐ अहले किताब आ जाओ एक ऐसी बात की तरफ जो हम में तुम में बराबर है वह यह कि हम सब सिवाए अल्लाह के किसी और की इबादत न करें और किसी को भी उसका साझी न ठहराएँ और हम में से कोई शख़्स किसी को भी अल्लाह के अलावा परवरदिगार न क़रार दे। फिर अगर वह लोग फिर जाएँ तो (ऐ मुसलमानों) तुम कह दो कि गवाह रहना हम तो मानने वाले हैं।

तशरीह व तफसीरः

''हाज्जक'' में ''हाज्ज'' भूतकाल का लफ्ज़ है, इसका मसदर ''मुहाज्जतुन'' है जिसके माने हैं आपस में तकरार व हुज्जत करना और झगड़ना। ''नबतहिल'' का मसदर ''इब्तेहाल'' है मशहूर माने हैं आजज़ी और गिड़गिड़ाने के साथ अल्लाह के दरबार में दुआ करना मगर यहाँ ''इब्तेहाल'' ''मुबाहला'' के माने में आया है। जो ''भलुन'' से बना है और इसके माने हैं बद्दुआ करना और लानत करना इस तरह ''मुबाहला'' के माने होंगे आपस में एक का दूसरे के लिए बद्दुआ करना कि अगर वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की लानत हो और वह तबाह व बर्बाद हो जाए। इब्तेहाल से यही माने मुराद हैं। ''क़ससुन'' का लफ्ज़ बहुवचन नहीं है बल्कि एकवचन है। माने में क़िस्सों और ख़बरों से तैयार एक ऐसा बयान और ऐसी कहानी जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्सों से जुड़ा और मुसलसल हो मगर जब ''क़ससुन'' के बजाए ''क़िससुन'' बोलते हैं ''क़ाफ'' पर ज़ेर के साथ तो ''क़िस्सा'' का बहुवचन मुराद होता है यानी बहुत से क़िस्से और कई कहानियाँ।

हज़रत ईसा इब्ने मरियम (अ0) के बारे में पूरी वज़ाहत के साथ सही क़िस्सा बताकर अब हुज़ूर सरवरे काएनात (स0) से इरशाद हो रहा है कि अगर इस खुले बयान के बाद भी कोई शख़्स तुम से हुज्जत करे और अपनी ज़िद पर क़ायम रहे और झूठे अक़ीदों पर जमा रहे तो ऐसे सभी लोगों को तुम मुबाहला की दावत दे दो और अपनी मुख़ालिफों से कहो कि हम तुम सब मिलकर अपने बेटों, अपनी औरतों और अपनी जानों के साथ मुबाहला के लिए निकलें और ख़ुदा के दरबार में आजज़ी के साथ सवाल करें कि हम दोनों फरीक़ों में से जो झूठा हो उस पर अल्लाह अपनी लानत नाज़िल फरमाए। मुबाहला की आयत और इससे जुड़ी दूसरी आयतों के नाज़िल होने की वजह नसारा की वह जमात थी जो नजरान के ईसाईयों की तरफ से हज़रत ईसा (अ0) के बारे में सरवरे काएनात (स0) से बहस व बातचीत

करने के लिए 9 हिजरी में मदीने आई थी। नजरान, यमन का एक मशहूर शहर है जो उस ज़माने में ईसाईयत का बड़ा मरकज़ था। ईसाई जमाअत में साठ आदमी थे जिनमें से चौदह लोग उनके सरदार थे और उनमें से तीन नुमाइन्दे पूरी जमाअत की सरदारी कर रहे थे। ''अब्दुल मसीह आक़िब'' जमाअत का अमीर था, ''ऐहम'' जमाअत का मुशीर था और ''अबुहारसा बिन अलक़मा'' उनके सबसे बड़े मज़हबी रहनुमा और बहुत बड़े दीनी सरदार की हैसियत रखते थे। अल्लामा फख़्रुद्दीन राज़ी और अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी लिखते हैं कि जिस वक़्त यह जमाअत मदीने के इरादे से रवाना होने लगी तो जिस ख़च्चर पर अबुहारसा बिन अलक़मा सवार था उसने ठोकर खाई। यह देखकर उसके भाई ''कुर्ज़ बिन अलक़मा'' की ज़बान से निकला ''तइसल अबअद'' दूर वाला शख़्स हलाक हो जाए। उसकी मुराद ख़ुदा की पनाह सरवरे दो आलम (स0) की पाक ज़ात थी। यह सुनते ही अबुहारसा ने कहा ''तइसत उम्मुका'' तेरी माँ हलाक हो जाए। कुर्ज़ अपने भाई की यह बात सुनकर हैरान रह गये। फिर उनके पूछने पर कि अबुहारसा ने ऐसा क्यों कहा उसने जवाब दियाः ख़ुदा की क़सम मैं ख़ूब जानता हूँ कि मुहम्मद वही रसूल हैं जिनकी ख़ुशख़बरी तौरात व इन्जील और दूसरी आसमानी किताबों में मौजूद है। इसलिए कुर्ज़! तुम उनकी शान में ऐसी गुस्ताख़ न करो। कुर्ज़ बोले कि फिर तुम उनकी नुबुव्वत का एलान क्यों नहीं कर देते। उसने जवाब दिया कि अगर मैं इस का एलान कर दूँगा तो ईसाई सलतनतों की तरफ से जो बेशुमार दौलत मुझे मिल रही है और ईसाई दुनिया में जो मेरी बेइन्तिहा इज्ज़त व बड़ाई है वह सब एक लम्हे में ख़त्म होकर रह जाएगी। यही वह बात थी जो कुर्ज़ के दिल में चुभती रही और आख़िरकार वह कुछ ज़माने बाद इस्लाम की इज़्ज़त पाकर साहबए केराम की जमाअत में दाख़िल हो गए। मुबाहले की आयत की शाने नुजूके के सिलसिले में इस्लामी मुहद्दिसीन व मुफस्सिरीन ने एकमत से कहा है कि जब नजरान के लोग सब कुछ समझााने के बाद भी अपनी गुमराही पर अड़े रहे तो हुज़ूर (स0) ने ख़ुदा के हुक्म से उन्हें मुबाहले की दावत दी जिस पर जमाअत के लोगों ने एक रोज़ की मोहलत माँगी। दूसरे दिन जब वह लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा कि सरवरे काएनात (स0) गोद में अपने छोटे नवासे हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को लिये हुए हैं, दूसरे नवासे हज़रत इमाम हसन (अ0) की उंगली पकड़े हुए हैं। रसूल (स0) की बेटी हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) आपके पीछे हैं और उनके पीछे शेरे ख़ुदा अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली (अ0) हैं। इस शान से हुज़ूर बाहर तशरीफ लाए हैं और अपने पाक अहलेबैत (अ0) से फरमा रहे हैं कि जब मैं झूठों पर बद्दुआ करूँ तो तुम सब मिलकर आमीन कहना। यह नूरानी मन्ज़र देखकर उनके सबसे बड़े मज़हबी सरदार ने जमाअत वालों से कहा कि मैं इस वक़्त ऐसे चेहरे देख रहा हूँ जो अगर दुआ कर दें तो पहाड़ भी अपनी जगह ठहर न सकें और सरक जाएँ तुम क्या चीज़ हो, इनसे मुबाहला करके बर्बादी में न पड़ों वरना सारी ज़मीन पर एक ईसाई भी बाक़ी न रहेगा। आखिर उन लोगों ने मुक़ाबले का इरादा छोड़ दिया और यमन वापस चले गये इस पर हुज़ूर (स0) ने इरशाद फरमाया कि अगर वह मुझ से मुबाहला करते और मैं बद्दुआ कर देता तो मदीने की पूरी वादी उन पर आग बनकर बरस पड़ती और एक ही साल के अन्दर दुनिया भर के सभी ईसाई ख़त्म हो जाते और नजरान का नाम व निशान भी बाक़ी न रहता।

